क्या प्रचण्ड-बाबूराम मानवाधिकारवादी गौतम नवलखा पर तोड़ेंगे चुप्पी

माओवादी आंदोलनकारियों के बीच भारत की छवि को स्वीकार्य बनाने में गौतम नवलखा का बहुत बड़ा योगदान है, जो शायद श्रीमान मोदी का भारत भूल गया है।

विष्णु शर्मा का विश्लेषण

वर्ष 2005 में नेपाल के तत्कालीन राजा ज्ञानेन्द्र शाह ने वहां की लोकतांत्रिक सरकार को अपदस्त कर सत्ता पर निरंकुश राजशाही लाद दी थी। ज्ञानेन्द्र का आरोप था कि लोकतांत्रिक दल, मुख्य रूप से नेपाली कांग्रेस, भ्रष्ट हैं और माओवादी विद्रोह को थामने में विफल साबित हुए हैं।

1996 में आरंभ हुआ माओवादी जनयुद्ध अपने चरम पर था और देश के अधिकांश हिस्सों में माओवादियों की समानांतर सरकार काम कर रही थी, लेकिन इसी वक्त माओवादी पार्टी के भीतर पार्टी के अध्यक्ष पुष्प कमल दहाल 'प्रचण्ड' और बाबूराम भट्टराई के बीच अंतरविरोध भी तीव्र हो चुका था और पार्टी में विभाजन की स्थिति पैदा हो गई थी।

ये दोनों नेता ज्ञानेन्द्र के सत्ता हथियाने के बाद उत्पन्न राजनीतिक अवस्था का अपने अपने ढंग से आकलन कर रहे थे। प्रचण्ड का मानना था कि नेपाली क्रांति का मुख्य दुश्मन भारत है और ज्ञानेन्द्र को साथ ले कर क्रांति को आगे ले जाना चाहिए। इसके विपरीत बाबूराम का कहना था कि बदली हुई परिस्थिति में राजतंत्र मुख्य दुश्मन बन गया है और नेपाल के संसदीय दलों और लोकतांत्रिक देश भारत को साथ लेकर नेपाल में पूर्ण लोकतंत्र की स्थापना की जानी चाहिए। कालांतर में बाबूराम की लाइन की जीत हुई और माओवादी पार्टी और संसदीय दलों के बीच एक गठबंधन बना जिसे बनाने में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

2005 तक भारत माओवादी आंदोलन को आतंकवाद मानता था। इस पार्टी के बड़े नेता भारत की हिरासत में थे, लेकिन 2005 में भारत ने अपनी नीति को 180 डिग्री घुमा दिया और माओवादी आंदोलन को एक वैध लोकतांत्रिक आंदोलन के रूप में स्वीकार कर लिया।

भारत के लिए संतोष की बात यह थी कि बाबूराम भट्टराई की लाइन पर माओवादी पार्टी काम करने को तैयार है और उसने नव जनवादी कार्यक्रम को त्याग दिया है। पार्टी में बाबूराम की उपस्थिति ने आगे के संभावित कंफ्यूजन को मिटाने में भारत के नीति—निर्माताओं और विशेषज्ञों की खुब मदद की।

लेकिन कूटनायिक चालबाजियों, जासूसी

कथाओं और भारत तथा नेपाली राजनीति दलों के बीच जारी सौदेबाजियों के पर्दे के पीछे झांकने से पता चलता है कि नेपाल की तत्कालीन राजनीति की केन्द्रीय भूमिका में आने से ऐन पहले तक बाबूराम भट्टराई स्वयं अपने भविष्य को लेकर निश्चिंत नहीं थे।

2005 में माओवादी पार्टी ने बाबूराम भट्टराई, उनकी पत्नी हसिला यमि, पार्टी के पोलित ब्यूरो सदस्य दीनानाथ शर्मा और अन्य को बंधक बना लिया था। माना जा रहा था कि पार्टी उनकी हत्या करने वाली है। माओवादी पार्टी का आरोप था कि भारत में उनके बड़े नेताओं की गिरफ्तारियों में बाबूराम का हाथ है।

लेकिन बाबूराम नहीं मरे

बाबूराम आज जिंदा हैं क्योंकि गौतम नवलखा जैसे लोगों ने समय रहते उनका बचाव किया। इस बात की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता कि भारत भी बाबूराम जैसे 'सॉफ्ट' माओवादी को बचाना नहीं चाहता होगा या अपने स्तर से दवाब नहीं दे रहा होगा, लेकिन उन परिस्थितियों में भारत की चिंता को प्रचण्ड और उनकी पार्टी कितना मान्यता देते यह पूरे विश्वास के साथ नहीं कहा जा सकता। माओवादी पार्टी राजा के साथ मिलकर भारत के खिलाफ युद्ध में जाने के लिए भी तैयार थी। भारतीय सेना के संभावित हस्तक्षेप के विरुद्ध माओवादी जनसेना टनल अथवा सुरंग युद्ध का अभ्यास कर रही थी।

आनंद स्वरूप वर्मा, गौतम नवलखा और अन्य भारतीय बुद्धिजीवियों ने तत्कालीन नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) को खुला पत्र लिखा, जो टाइम्स ऑफ इण्डिया में भी प्रकाशित हुआ था, और बाबूराम के खिलाफ कार्रवाई न करने का अनुरोध किया। इस भय से कि बाबूराम के खिलाफ कार्रवाई से भारत के लोकतांत्रिक और वाम चिंतक नाराज हो जाएंगे माओवादियों ने बाबूराम को बख्श दिया। बाद में, जैसा कि उपर बताया गया है, बाबूराम पार्टी के शीर्ष नेतृत्व में पुन: स्थापित भी हो गए।

आज गौतम नवलखा जैसे वाम और लोकतांत्रिक मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को भारत का शत्रु बताया जा रहा है। 2005-2006 में नेपाल के माओवादी आंदोलनकारियों के बीच भारत की छवि को स्वीकार्य बनाने में इन चिंतकों का बहुत बड़ा योगदान है, जो शायद श्रीमान मोदी का भारत भूल गया है।

हम सिर्फ कल्पना ही कर सकते हैं कि माओवादी पार्टी और भारत के बीच जो अविश्वास की स्थिति थी वह क्या रूप धारण करती, यदि गौतम नवलखा और आनंद स्वरूप वर्मा जैसे बुद्धिजीवी देश में न होते जिन पर भारत को अपना शत्रु मानने वाले भी इतना विश्वास तो करते ही थे कि खुल कर अपने विचार रख सके।

कोई भी लोकतांत्रिक देश गौतम जैसे, सुप्रीम कोर्ट की भाषा में, सेफ्टी वॉल्व के बिना बहुत दिनों तक जिंदा नहीं रह सकता। गौतम जैसे स्वतंत्र चिंतकों की उपस्थिति देश को विश्वसनीय बनाती है। ये लोग विरोधी विचारों के मध्य संवाद को मुमकिन बनाते हैं जिससे शांतिपूर्ण सहअस्तित्व मुमकिन होता है। लेकिन दुख: की बात है कि प्रचण्ड, बाबूराम भट्टराई और खुद भारत भी गौतम और गौतम जैसे चिंतकों की भूमिका को भुला देना चाहते हैं।

इस वक्त प्रचण्ड भारत की चार दिवसीय यात्रा में हैं और यकीन है कि उनसे मिलने वाले पत्रकार गौतम के बारे में उनसे सुनना चाहेंगे। और यह भी उम्मीद है कि बाबूराम भट्टराई गौतम के पक्ष में खुला पत्र न भी लिखें तो ट्वीट तो करेंगे ही।

मायशा (सुधा भारद्वाज की बेटी) की चिट्ठी

सुबह के सात बजे थे. मम्मी ने उठाया सर्च करने आए हैं घर को, उठ जाओ. फिर उसके बाद जो हुआ वो सब जानते हैं. सब मम्मा के बारे में लिख रहे हैं. मैंने सोचा मैं भी लिख दूं (हाहा)...

मेरी और मम्मा की सोच में हमेशा से थोड़ा फर्क रहा है. मेरी सोच शायद मम्मा की तरह मैच नहीं करती. इस बारे में हमारी बहस भी हुई होगी. मैं हमेशा मम्मा को कहती थी कि, ''मम्मा हम ऐसी लाइफ़ क्यों लीड करते हैं बिल्कुल नॉर्मल सी, हम क्यूं अच्छे से नहीं रहते.'' मम्मा कहती थी कि बेटा मुझे ऐसे ही ग़रीबों के बीच में रहकर काम करना अच्छा लगता है. बाक़ी जब तुम बड़ी हो जाओगी तुम अपने हिसाब से रहना.

फिर भी मुझे बुरा लगता था. मैं कहती थी कि आप ने बहुत साल दिए हैं सभी लोगों को. अब अपने लिए टाइम निकालो और अच्छे से रहो.

मेरी नाराज़गी ये भी थी कि मम्मा ने मुझे वक्त नहीं दिया काम की वजह से. उनका ज़्यादा वक़्त लोगों के लिए होता था, मेरे लिए नहीं.

बचपन में यूनियन के एक चाचा की फ़ैमिली के साथ रहती थी. उनके बच्चे थे, वो साथ रहते थे. पर मम्मा की याद आती थी तो मैं मम्मा की साड़ी पकड़कर रोती थी. मुझे आज भी याद है मैं बीमार थी और चाची ने मेरे पास आकर मेरे सिर पर हाथ फेरा था. मैने सोचा मम्मा होगी. अचानक मैं बोल पड़ी ''मां''. फिर आंख खोली तो देखा, चाची थी. बचपन का कम वक़्त ही मैंने मम्मा के साथ बिताया है.

जब मैं छठी क्लास में आयी तब प्रॉपर मम्मा के साथ रहना शुरु किया, शायद इसीलिए हम एक-दूसरे को आज भी कम समझ पाते हैं. मैंने उनको देखा है पूरे दिन काम करते हुए, बिना नहाये, बिना खुद का ख़्याल रखे, बिना खाये, बिना सोये. दूसरों के लिए लड़ते हुए, दूसरों के लिए करते हुए. मुझे बुरा लगता है जब मम्मा अपना ख़्याल नहीं रखती, उनके पास जब केस आता था तो मम्मा काफ़ी अपसेट होती थीं. उनके लिए मैं सोचती थी कि ये इनका प्रोफ़ेशन है, WHY SHE IS GETTING UPSET ABOUT IT. बोला भी है मैंने उन्हें. वो कहती थी कि हम नहीं सोचेंगे तो कौन सोचेगा.

I HAVE HEARD ON NEWS THAT कोई कह रहा था कि ये ऐसे लोग आदिवासियों के लिए काम करते हैं. कहते हैं पर ये दिखावा करते हैं, इनके बच्चे तो ग्र में जाकर पढ़ते हैं. शायद उनको मेरे बारे में नहीं पता कि मैं एक बस्ती के सरकारी स्कूल में पढ़ी हूं, हिंदी मीडियम में. और मैं हमेशा मम्मा से लड़ती थी कि खुद इंग्लिश मीडियम में पढ़ी और मुझे हिंदी में पढ़ाया. BUT वो अलग है कि इंग्लिश बोलना और पढ़ना मैंने ख़ुद से सीखा क्योंकि मेरा INTEREST था. हां, 12वीं आकर मैं मम्मा से ज़िद कर के NIOS के इंग्लिश मीडियम से पढ़ाई की क्योंकि मेरा मन था.

मम्मा को बोला जा रहा है कि नक्सली है, मुझे बुरा नहीं लगता बस यही सोचती हूं कि लोग पागल हो चुके हैं बिना किसी की असलियत जाने उनको कुछ भी कहने की आदत पड़ गई है लोगों को. मुझे उनकी बातों से, पुलिस की बातों से फ़र्क नहीं पड़ता क्योंकि मुझसे अच्छा मेरी मां को कौन जानता होगा.

अगर आदिवासियों के हक़ के लिए लड़ना, मजदूर-किसानों के लिए लड़ना, दमन और शोषण के ख़िलाफ़ लड़ना और अपनी पूरी ज़िंदगी उनके लिए दे देना, अगर ऐसे लोग नक्सली होते हैं तो ड्ढ ञ्चश्व्रस्न नक्सली काफी अच्छे हैं. कोई कुछ भी कहे I AM PROUD TO BE HER DAUGHTER.

मम्मा मुझे हमेशा कहती हैं, बेटे मैंने पैसे नहीं लोगों को कमाया है AND YES SHE IS RIGHT, I CAN SEE THAT

LOVE YOU MOM

MAAYSHA

भीमा कोरेगांव मामले में मुंबई पुलिस को लताड़

(जनज्वार) आप लोगों को याद होगा कि 31 अगस्त को भीमा कारेगांव हिंसा मामले में गिरफ्तार अभियुक्तों को लेकर पुलिस ने एक प्रेस कांफ्रेंस की। मुंबई में आयोजित इस प्रेस कांफ्रेंस में पुलिस जो बताया उसे कोर्ट ने पुलिस का मीडिया ट्रायल माना है। पुलिस इस प्रेस कांफ्रेंस में मीडिया को वो पत्र पढ़कर सुना रही थी जो कथित तौर पर प्रधानमंत्री मोदी को जान से मारने के बारे में है और वह पत्र हाल ही में गिरफ्तार मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को लिखा गया है।

मुंबई हाईकोर्ट ने सोमवार को पुलिस से पूछा कि जब मामला अदालत में न्यायाधीन है, सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में 6 सितंबर तक कुछ न करने का आदेश दिया है, फिर प्रेस कांफ्रेंस कैसे की गयी? उन सबूतों को पब्लिक कैसे किया गया जिसे अदालत में पेश किया जाना है? मीडिया ट्रायल क्यों हुआ?

पुलिस ने शुक्रवार 31 अगस्त को मुबई में प्रेस कांफ्रेंस कर 5 मानवधिकार कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी और उनका माओवादियों से संबंध साबित करने वाले डाक्यूमेंट्स दिखाए थे, जिसमें किसी ईमेल का जिक्र था, जिसमें प्रधानमंत्री मोदी को मारने की बात है। प्रेस कांफ्रेंस में महाराष्ट्र पुलिस के एडीजी परमबीर सिंह, पुणे के अतिरिक्त पुलिस कमीश्नर शिवाजी बोड़के और डॉक्टर शिवाजी पवार शामिल थे।

पुलिस से तल्खी भरा यह सवाल मुंबई हाईकोर्ट की संयुक्त पीठ के न्यायाधीश एसएस शिंदे और मृदुला भटकर ने किया। न्यायाधीशों ने यह सवाल तब किया जब अदालत में सतीश गायकवाड़ नाम के व्यक्ति ने याचिका दायर कर बताया कि वह भीमा कोरेगांव हिंसा का पीड़ित है और वह चाहता है कि अदालत इस मामले की जांच की जिम्मेदारी नेशनल इंवेस्टीगेशन एजेंसी 'एनआईए' को सौंपे। याचिका की सुनवाई की अगली तारीख अदालत ने 7 सितंबर को रखी है।

गौरतलब है कि 29 अगस्त को सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने पुलिस द्वारा गिरफ्तार सभी मानवाधिकार कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी पर रोक लगा दी और कहा कि यह सभी लोग हाउस अरेस्ट रहेंगे और अगली सुनवाई 6 सितंबर को होगी। जबकि इसी मामले में दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा कि वह सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का जस का तस रखती है और अगली सुनवाई 14 सितंबर को करेगी।

पुलिस ने 31 अगस्त को कवि वरवरा राव, मानवाधिकार कार्यकर्ता गौतम नवलखा, सुधा भारद्वाज, अरुण फरेरा और वर्णन गोंजाल्विस को छापा मारकर गिरफ्तार कर लिया गया था। इस दौरान पुणे पुलिस ने एक साथ देश के 6 राज्यों के आठ स्थानों पर 12 लोगों के यहां छापे मारे थे।

तरुण सागर की वीभत्स अंतिम यात्रा, इस अंधविश्वास की हो रही चौतरफा आलोचना

19 साल की उम्र से दुनिया को कड़वे प्रवचन देने वाले तरुण मुनि सागर के प्रवचनों का असर इतना रहा कि उनके मरने के बाद उनके चेले—चपाटों और जैन धर्मावलंबियों ने उनकी लाश की भी बोली करोड़ों में लगाई।

जनज्वार। कड़वे वचन फेम जैन मुनि तरुण सागर का कल निधन हो गया। 51 वर्षीय तरुण सागर ने दिल्ली में शाहदरा के कृष्णा नगर इलाके में अंतिम सांस ली। मगर मौत के बाद उनके अंतिम संस्कार को धर्म—आस्था का जिस तरह से व्यापार बनाया गया और आस्तिकता के नाम पर उनके शरीर को रस्सियों से बांध जबरन पदमासन में बिठाए हुए यात्रा निकाली गई, वह दृश्य विचलित कर देता है।

गौरतलब है कि तरुण सागर पीलिया से पीड़ित थे और दिल्ली के एक प्राइवेट अस्पताल से अपना इलाज करवा रहे थे। मौत से पहले उनका पूरा शरीर पीला पड़ चुका था। मीडिया में आई खबरों के मुताबिक वे संथारा प्रथा का पालन कर रहे थे और उन्होंने दवाइयां लेने से इंकार कर दिया था। यानी जबरन मौत के मुंह में गए या फिर धकेले गए।

संथारा से जबरन मौत की तरफ जाना तो जैन धर्म का मोक्ष से जुड़ा मामला है, मगर मौत के बाद उनकी शवयात्रा में जिस तरह से उनका शरीर पदमासन में जबरन रस्सियों से बांधकर रखा गया था वह धर्म के पाखंडियों की संवेदनहीनता की पराकाष्ठा, हिंसक और ईसानियत को भी शर्मसार करने वाला था। एक मुनि जिसके बारे में कहा जाता था कि वह अपने कड़वे वचनों से अंधविश्वास को दूर करने का काम कर रहा था उसकी मौत से लेकर अंतिम क्रिया तक बहुत बड़ा पाखंड और अंधविश्वास बनकर रह गई।

19 साल की उम्र से दुनिया को कड़वे प्रवचन देने वाले तरुण मुनि सागर के प्रवचनों का असर इतना रहा कि उनके मरने के बाद उनके चेले—चपाटों और धर्मावलंबियों ने उनकी लाश की भी बोली करोड़ों में लगाई, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। उनकी अंतिम यात्रा का चित्र शेयर करते हुए आस्तिक और नास्तिक दोनों थू—थू कर रहे हैं।

तरुण सागर की अंतिम यात्रा का चित्र साझा करते हुए वरिष्ठ लेखक अनिल जनविजय लिखते हैं, तरुण सागर को निर्वाण के बाद करुण सागर बना दिया इन मूर्ख पाखण्डियों ने।

वहीं समीर सलिल लिखते हैं, 'अगर लोग इसे ही आस्था कहते हैं तो मैं नास्तिक ही सही! श्रद्धेय तरुण सागर जी महाराज जी के मृत शरीर के साथ ऐसा बर्ताव देखकर मन विचलित हो गया। प्रभु ने आपको संत तो बना दिया पर संस्कारियों ने भक्ति नहीं सीखी। हे ईश्वर सद्बुद्धि दे।'

वरिष्ठ पत्रकार अनिल जैन लिखते हैं, 'श्रद्धा का अंधत्व? देह की लाचारी-बेबसी! सच में मुनिधर्म की परम्परा का निर्वहन कितना कठिन होता है? दिवंगत जैन मुनि के पार्थिव शरीर के साथ इस तरह का क्रूर और हिंसक सुलूक करने वाले 'श्रद्धालुओं' को क्या सभ्य कहा जा सकता है?'

लेखक सचिन कुमार जैन तरुण सागर के मृत शरीर का चित्र साझा करते हुए लिखते हैं, 'जो व्यक्ति समाज का नेत्र खुलवा रहा था, जो अहिंसा की बात कर रहा था, उसके साथ समाज ने अमानवीय और हिंसक व्यवहार किया। वो पता नहीं किस मुक्ति की बात करते रहे कि उनके अनुयायी समाज ने उन्हें ही बंदी बना दिया। जरा विचार कीजिये इस चित्र को देखकर बच्चों के मन में क्या भाव आएंगे? मैं अपने समाज के इस तरह के व्यवहार और इस तरह की कट्टर परंपराओं के पक्ष में नहीं हूँ। उनके अंतिम संस्कार से जुड़ी प्रक्रियाओं के लिए करोड़ों रुपये की बोलियां लगाई गयीं, यह तो जैन धर्म का सिद्धांत नहीं है, फिर हम ऐसा कर क्यों रहे हैं? अपने धर्म को बचाइए, इसे खत्म किया जा रहा है।'

वहीं तारा शंकर सोशल मीडिया पर लिखते हैं, 'मुनि का दिगंबर (नंगा रहना) होना उनकी धार्मिक और व्यक्तिगत स्वतंत्रता है! उसका पूरा सम्मान करता हूँ लेकिन चित्र में जैन अनुयायी तरुण सागर के शव को बाँधकर सार्वजनिक तौर पर भरे बाजार घुमा रहे हैं! ये उनके आइडेंटिटी क्राइसिस का प्रमाण है, दिखावा है, मुनि के लिए मरणोपरांत अपमानजनक है और दुखद है।'

डॉ. प्रकाश हिंदुस्तानी तो धर्म के इस नंगेपन को और नंगा करते हुए खुलासा करते हैं, 'तरुण सागर के अंतिम संस्कार देने की बोली? 1 करोड़ 94 लाख लगाई गई। अन्य बोली में -चादर की बोली 52,94000, मुहपति की बोली 21,94,194, बांया कंधा आगे वाला लगाने की बोली 32,00,000, सीधा कंधा आगे वाला लगाने की बोली 21,21,111, बांया कंधा पीछे वाला 22,00,000, सीधा कंधा पीछे वाला 22,00,000, गुलाल उछाल की बोली 41,00,000, सिक्के उछाल की बोली सोना चांदी आदि 21,00,000 और अग्नि संस्कार देने की बोली 1 करोड़ 94 लाख।'

जितेंद्र कुमार ने कटाक्ष किया है, 'धर्म के इस वीभत्स प्रदर्शन को देखें। किसी संत की शवयात्रा कहीं ऐसे निकाली जाती है? जैन मुनि तरुण सागर के पूर्व किस जैन मुनि की शवयात्रा इस तरह निकाली गई?'

अरविंद कुमार कहते हैं, 'यह कैसा अभद्र तरीक़ा है - मुनि तरुण सागर की शवयात्रा का।'